



वर्ष 24 अंक 7 जुलाई 2007

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक
अनुसंधान परिषद् का गृह-बुलेटिन

आई सी ए आर द्वारा साम्बा महसुरी के जीवाणु रोग प्रतिरोधक संजात को एक किस्म के रूप में जारी करने की संस्तुति

एक सहयोगात्मक परियोजना के अंतर्गत कोशिकीय एवं आण्विक जीवविज्ञान केन्द्र (सी सी एम बी), हैदराबाद तथा डायरेक्टोरेट ऑफ राइस रिसर्च (आई सी ए आर की एक संघटक प्रयोगशाला) ने आण्विक संकेतक सहायक संकर प्रजनन के प्रयोग द्वारा उच्च स्तर की चावल की किस्म साम्बा महसुरी में जीवाणु पर्णक्षीर्णता (बैक्टिरियल लीफ ब्लाइट) रोग प्रतिरोधिता के लिए तीन जीनों का प्रवेश कराया है। चावल का यह विभेद, जो आर पी बायो 226 (आई ई टी 19046) कहलाता है, साम्बा महसुरी की आनुवंशिक पृष्ठभूमि में बी एल बी प्रतिरोधक जीन Xa21, Xa13 तथा Xa5 समाहित कर आइसोजेनिक लाइन के बेहद समीप हैं।

आर पी बायो 226 आई सी ए आर के ऑल इंडिया कोऑर्डिनेटड राइस इम्प्रूवमेंट प्रोजेक्ट के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर कृषि परीक्षणों से गुजर चुका है। यह पाया गया है कि यह साम्बा महसुरी की अच्छी पैदावार के साथ-साथ इसे खाद्य गुणवत्ता भी प्रदान करता है तथा इसके अतिरिक्त एक गंभीर रोग, बी एल बी का प्रतिरोधक भी है। उपरोक्त के कारण ही हैदराबाद में आयोजित 42वें ऑल इंडिया राइस रिसर्च ग्रुप मीटिंग के दौरान आई सी ए आर द्वारा इसे एक किस्म के रूप में जारी करने की संस्तुति की गयी है।

आर पी बायो 226 भारत के दक्षिण पूर्व और पश्चिमी भागों के कुछ हिस्सों जहां साम्बा महसुरी, सोना महसुरी इत्यादि जैसी उच्च गुणवत्ता की किस्मों की खेती की जाती है तथा जो बी एल बी जैसे स्थानिक रोगों से ग्रस्त हैं, के लिए उपयुक्त है। साम्बा महसुरी जिसे मूल रूप से आंध्र प्रदेश के आचार्य एन जी रंगा. कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किया गया था, वर्तमान में भारत के धान की पैदावार वाले क्षेत्र के 3.3 प्रतिशत में इसकी खेती की जाती है तथा इसे पांच राज्यों (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ तथा उत्तर प्रदेश) में उगाया जाता है। साम्बा महसुरी की बाजार में भारी मांग है तथा यह अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक मूल्य अर्जित करता है। चूंकि आर पी बायो 226 पैदावार, अन्न तथा खाद्य गुणवत्ता में समान है अतः यह बी एल बी स्थानिक रोग वाले क्षेत्रों में साम्बा महसुरी का स्थान ले सका है।

यह भारत में जैवप्रौद्योगिकी के द्वारा विकसित ऐसी पहली चावल की किस्म उत्पाद का उदाहरण है जिसे व्यवसायीकरण हेतु भी स्वीकृति प्राप्त है।

एन ए एल की कार्बन फाइबर प्रौद्योगिकी केमरॉक इंडस्ट्रीज को हस्तान्तरित की गयी

राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं (एन ए एल) बंगालुरु ने केमरॉक इंडस्ट्रीज एण्ड एक्सपोर्ट लिमिटेड, बडोडरा के साथ 16 अप्रैल 2007 को कार्बन फाइबर के उत्पाद तथा व्यवसायीकरण के लिए एक लाइसेंस एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए हैं। डा. ए. आर. उपाध्या, निदेशक, एन ए एल तथा श्री कल्पेश पटेल, अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक, केमरॉक इंडस्ट्रीज एण्ड एक्सपोर्ट लिमिटेड भी लाइसेंस एग्रीमेंट

पर हस्ताक्षर करने के लिए उपस्थित थे। लाइसेंस एग्रीमेंट के अन्तर्गत मैसर्स केमरॉक को कार्बन फाइबर तकनीक प्राथमिक रूप से राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति तथा निर्यात के लिये हस्तान्तरित की जाएगी।

कार्बन फाइबर प्रौद्योगिकी एक योजनागत

प्रौद्योगिकी है जो विश्व में बहुत कम देशों के पास उपलब्ध है। कार्बन फाइबर एक उच्च प्रौद्योगिकी सामग्री है जिसके उस स्थानों पर बहुत से अनुप्रयोग हैं जहां कभी भी पुर्जों को कमभार के साथ मजबूती/ठोसीयता के गुण की आवश्यकता होती है। एन ए एल ने इस प्रौद्योगिकी का विकास डीआरडीओ/एडीए प्रायोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत किया है।

केमरॉक नवीनतम निर्माण सुविधाओं

तथा एक समेकित उत्पाद, रेंज के साथ संयोजकों के क्षेत्रा में अग्रणी है। इस रेंज में हाई परफॉर्मेंस रिन्फोर्स्ड पॉलीमर कम्पोजिट्स तथा असंस्तृप्त पॉलीस्टर तथा फिनोलिक रेजिन सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त एक सशक्त घरेलू उपभोक्ता आधार होने के साथ-साथ केमरॉक विकसित विश्व के 50 से भी अधिक देशों में फैले ग्राहक आधार के साथ निर्यात पुरस्कार का विजेता भी है।



डा ए आर उपाध्या, निदेशक, एन ए एल तथा श्री कल्पेश पटेल, अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक, केमरॉक इंडस्ट्रीज एण्ड एक्सपोर्ट लिमिटेड, लाइसेंस एग्रीमेंट का आदान प्रदान करते हुए



लाइसेंस एग्रीमेंट के दौरान उपस्थित जन

यूरोपियन कमीशन के प्रतिनिधि मंडल द्वारा एन ए एल का दौरा

यूरोपियन कमीशन के उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मण्डल ने राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं (एन ए एल), बंगलुरु का दौरा किया। डा ए आर उपाध्या, निदेशक, एन ए एल ने प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत किया। डा जोस मेनुएल सिल्वा रोड्रीगेज, महानिदेशक, यूरोपियन कमीशन ने यूरोपियन यूनियन (ई यू) की विज्ञान तथा यूरोपियन यूनियन प्रौद्योगिकी नीतियों तथा एवं भारत के मध्य अनुसंधान सहयोग के अवसरों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण दिया। उसके पश्चात् एन ए एल तथा यूरोपियन कमीशन के मध्य परस्पर सहयोग के सम्बन्ध में वृहद चर्चा भी हुई।



डा जोस मेनुएल सिल्वा रोड्रीगेज, महानिदेशक, यूरोपियन कमीशन प्रस्तुतीकरण देते हुए



डा ए आर उपाध्या, निदेशक, एन ए एल प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत करते हुए



एन ए एल तथा यूरोपियन कमीशन के मध्य परस्पर सहयोग के सम्बन्ध में चर्चा के दृश्य

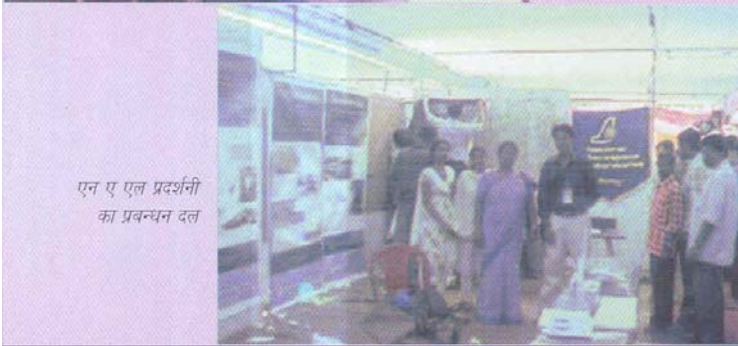


प्रदर्शनी एल्कोम ध्रुव 2007 का एक दृश्य

एन ए एल ने एल्कोम ध्रुव 2007 में भाग लिया

राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं (एन ए एल), बंगलुरु ने एन एस एस कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, पालक्काड द्वारा फोर्ड मैदान, पालक्काड में आयोजित प्रदर्शनी एल्कोम ध्रुव 2007 में भाग लिया। जिला शिक्षा अधिकारी पालक्काड समारोह के मुख्य अतिथि थे। प्रदर्शनी को भारी संख्या में व्यक्तियों विशेषकर विद्यार्थी समुदाय ने देखा जिन्होंने एन ए एल की सुविधाओं में बेहद रुचि व्यक्त की।

एन ए एल प्रदर्शनी का प्रबन्धन एक दल, जिसमें के टी एम डी की सुश्री शशिकला जी आर मूर्ति तथा श्री वसन्त आर पिलारे सम्मिलित थे, के द्वारा किया गया।



एन ए एल प्रदर्शनी का प्रबन्धन दल

भारत के गुरुत्व नक्शे का विमोचन

राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एनजीआरआई), हैदराबाद ने जियोलॉजीकल सर्वे ऑफ इंडिया, सर्वे ऑफ इंडिया, ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड तथा ऑयल इंडिया लिमिटेड ने भारत के गुरुत्व नक्शा शृंखला का 1:2 मिलियन स्केल पर पुनरीक्षित नक्शा तैयार तथा प्रकाशित किया है। इस नक्शे का लगभग 30 वर्षों के बाद अद्यतन किया गया है।

इससे पहले वर्ष 1975 में संस्थान ने 1:5 मिलियन स्केल पर एक गुरुत्व नक्शा शृंखला का सैट तैयार किया था। गुरुत्व नक्शे की वर्तमान शृंखला में (सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैले) लगभग 50,000 गुरुत्व स्टेशन लिए गये हैं जो कि एक स्टेशन से 3 आर्क अन्तराल पर हैं। ये नक्शे न केवल शिक्षाविदों, अनुसंधानकर्ताओं तथा अन्वेषकों के लिए बहुउपयोगी होंगे बल्कि विद्यार्थियों तथा भू-प्रणाली विज्ञान में विशेषकर ठोस भूमि भू-भौतिकी के क्षेत्र में कार्य कर रहे लोगों के लिए भी उपयोगी होंगे। इनका अन्तरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में निर्णायक विस्तार हो सकता है।

श्री पी एम तेजाले, महानिदेशक, जी एस आई ने एन जी आर आई में नक्शे का विमोचन किया तथा 'नोटेबल रिसर्च इन अर्थ साइंसेज फॉर सोशियोइकोनोमिक्स एंडवासेज ऑफ दी नेशन' पर आयोजित द्वि द्विवसीय सेमिनार का भी उद्घाटन किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने गुरुत्व नक्शे की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा कहा पृथ्वी प्रणाली विज्ञान के क्षेत्र में गुरुत्व नक्शों का प्रयोग विभिन्न क्रस्टल ब्लॉकों समुद्री घाटी तथा वृहत मात्रा में विभिन्न अवसादी घाटियों तथा उप घाटियों के वर्गीकरण तथा चिथन के अतिरिक्त जियोडॉयनामिक्स, हैक्टोनिक्स क्रस्टल स्ट्रक्चरल सिग्नेचर्स तथा भूकम्प प्रक्रियाओं के लिए किया जाता है।



डी वी पी डिमरी, निदेशक, एनजीआरआई (बायें), डा. हरी नारायण, पूर्व निदेशक, एनजीआरआई (बीच में) तथा श्री पी एन तेजाले, महानिदेशक, जी एस आई भारत के गुरुत्व नक्शे के विमोचन के दौरान

भूभौतिकी के महत्व पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि पृथ्वी प्रणाली विज्ञान की वर्तमान संकल्पना में भू-भौतिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है अतः वैश्विक रूप से एक केन्द्रीय विषय के रूप में मानी जाती है।

श्री तेजाले ने भूविज्ञान संगठनों के मध्य सहयोग की आवश्यकताओं को रेखांकित किया "हमें एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने के बजाय एक दूसरे का पूरक तथा सहयोगी होना चाहिए" उन्होंने कहा।

इससे पहले अपने स्वागत अभिभाषण में डा. वी.पी. डिमरी, निदेशक, एनजीआरआई ने राष्ट्रीय विकासात्मक गतिविधियों "ऐसी गतिविधियां जो हम आजकल देख रहे हैं" में विभिन्न भू विज्ञान संगठनों के मध्य सहयोग के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने एन

जीआरआई द्वारा नवीन गुरुत्व नक्शा शृंखला की तैयारी के विभिन्न प्रयासों को सांराशित किया तथा इस राष्ट्रीय कार्यक्रम में भागीदार संगठनों के दलीय प्रयासों की सराहना की।

एनजीआरआई के पूर्व निदेशक डा. हरी नारायण जिनके मार्गदर्शन में 30 वर्ष पूर्व भारत का गुरुत्व नक्शा प्रकाशित हुआ था, ने संसाधनों की कमियों तथा प्राकृतिक आपदाओं की चुनौती का सामना करने की आवश्यकता पर जोर दिया। डा. हर्ष के गुप्ता, पूर्व सचिव डी ओ डी, भारत सरकार तथा डी एम काले, कार्यपालक निदेशक, ओ एन जी सी भी इस अवसर पर बोले।

डा. बिजेन्द्र सिंह, प्रोजेक्ट लीडर, गुरुत्व समूह, एनजीआरआई ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

एनसीएल में डॉ पी नामपेरूमलसामी द्वारा दिया गया प्रो. तिलक स्मृति व्याख्यान

डॉ पी नामपेरूमलसामी, अध्यक्ष, अरविन्द नेत्राचिकित्सा सिस्टम एवं अरविन्द नेत्रा अस्पताल तथा स्नातकोत्तर नेत्राचिकित्साविज्ञान संस्थान, मद्रुरै ने दिनांक 18 मई 2007 को राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस व्याख्यान एवं पांचवा प्रोफेसर वी.डी. तिलक स्मृति व्याख्यान दिया। प्रो. तिलक वर्ष 1966 से 1978 तक एनसीएल के निदेशक पद पर कार्यरत थे तथा एनसीएल एवं रसायन उद्योग के बीच प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित करने में वे अग्रणी व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे। प्रो. तिलक ने रसायन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके गतिशील नेतृत्व में एनसीएल ने अपनी तकनीक/प्रौद्योगिकी पर आधारित कई उद्योगों की स्थापना में योगदान दिया था। उन्होंने रसायन उद्योग की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी योजना तैयार करने में भी बहुत बड़ा योगदान दिया।

डॉ नामपेरूमलसामी ने 'ग्रामीण क्षेत्रों में नेत्रा चिकित्सा में अभिनव परिवर्तन : अरविन्द मॉडल' नामक विषय पर व्याख्यान देते हुए अरविन्द नेत्रा चिकित्सा सिस्टम नामक संस्था के बारे में जानकारी दी। यह संस्था अखंड रूप से सामाजिक स्वास्थ्य बनाए रखने में जुटी हुई है तथा यह स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रमों के आयोजन, शिक्षा, अस्पताल प्रबंधन, अनुसंधान तथा सम्बन्धित उपकरणों/अवयवों के निर्माण कार्य में भी कार्यरत है। उन्होंने आगे बताया कि यद्यपि उनके पास उत्कृष्ट दर्जे की नेत्रा चिकित्सा उपलब्ध थी, तथापि उन्होंने सामुदायिक नेत्रा चिकित्सा प्रणाली आरम्भ की। हम अधिकांश रूप से ग्रामीण समाज की सहायता पर निर्भर रहे तथा कार्य एवं गुणवत्ता की दृष्टि से हमारा विकास हुआ जिससे आज हम किफायती तौर पर कम खर्च में नेत्रा चिकित्सा उपलब्ध

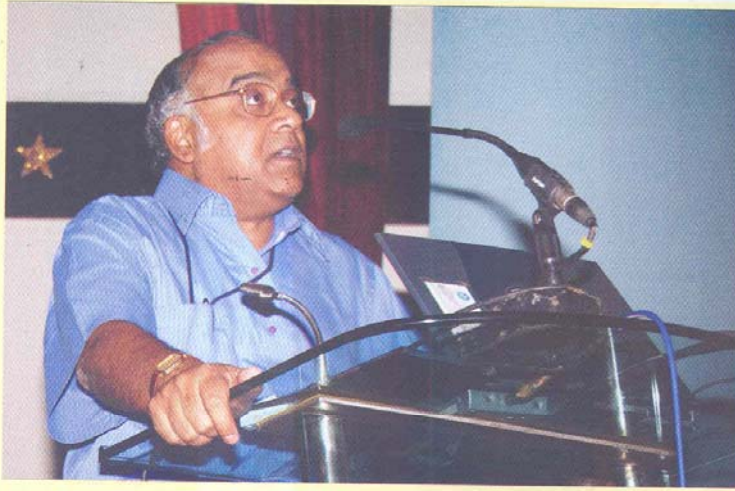
करते हैं। उन्होंने विशिष्ट रूप से ग्रामीण समाज के लिए नेत्रा चिकित्सा प्रणाली के प्रबंधन में किए गए अभिनव परिवर्तन पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पूरे विश्व में 4.5 करोड़ लोग नेत्राहीन हैं जिनमें से 1.2 करोड़ भारत में हैं। भारत में अधिकांशतः अन्धत्व को उपचार द्वारा ठीक किया जा सकता है तथा इस रोग की रोकथाम भी की जा सकती है किन्तु नेत्राहीनों की चिकित्सा हेतु हमारे देश में पर्याप्त सुविधाएं एवं चिकित्सक उपलब्ध नहीं हैं। रोग की पहचान किए जाने पर भी नेत्रारोगों से पीड़ित अधिकांश लोग उपचार का खर्च वहन नहीं कर पाते हैं। इन परिस्थितियों में केवल सरकार ऐसे लोगों की आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाती है। डॉ वेंकटरसामी ने 1976 में पांच सहयोगियों के साथ 11 बिस्तरों वाला अस्पताल किराए की एक इमारत में शुरू किया था। तीन दशकों के कालान्तर में यह अस्पताल अब एक संस्था का रूप ले चुका है जो तमिलनाडु में पांच स्थानों पर 3600 बिस्तर वाले पांच अस्पताल चलाती है। इनमें से एक अस्पताल पॉडिचेरी में है। उन्होंने यह भी बताया कि छठवां अस्पताल पड़ोसी राज्य आंध्र प्रदेश में स्थापित किया जा रहा है। अस्पताल प्रबंधन में अभिनव परिवर्तन के सम्बन्ध में बताते हुए उन्होंने कहा कि हम केवल लोगों को नेत्राचिकित्सा का प्रशिक्षण ही नहीं देते बल्कि अरविन्द संस्थान के समान ही नए अस्पताल खोलने के लिए हम उन्हें प्रबंधन कौशल भी प्रदान करते हैं। प्रत्येक राज्य में इस तरह के तीन अस्पताल पहले से ही उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल एवं गुजरात में कार्यरत हैं। अरविन्द संस्थान के पास प्रशिक्षित पैरामेडिकल स्टाफ भी है जो देहातों में जाकर नेत्रा रोगियों को प्राथमिक तथा दूसरे चरण के उपचार प्रदान करते हैं और रोग अधिक गंभीर होने पर रोगी को उपचार के लिए मूल अस्पताल



डॉ पी नामपेरूमलसामी, प्रो. तिलक स्मृति व्याख्यान देते हुए

भेजते हैं। इससे चिकित्सकों के मूल्यवान समय की भी बचत होती है। अरविन्द संस्थान के पास अपनी मजबूत संचार एवं वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग तथा टेलीफोन द्वारा औषधोपचार की सुविधा उपलब्ध है जिससे मूल अस्पताल के चिकित्सक नेत्रा चिकित्सा शिविरो एवं केन्द्रों पर आने वाले रोगियों को सही उपचार प्रदान करते हैं।

अरविन्द नेत्रा चिकित्सा संस्थान द्वारा इस क्षेत्र में किए गए अभिनव परिवर्तनों का लाभ भारत के बाहर के लोगों को भी मिलने लगा है। अरविन्द संस्थान ने चीन के विश्वविद्यालयों के साथ समझौता किया है जिसके अधीन चीन के चिकित्सक केवल शल्यचिकित्सा में प्रशिक्षण प्राप्त करने ही मद्रुरै नहीं आते हैं बल्कि वे अरविन्द संस्थान के अस्पताल प्रबन्धन का अध्ययन भी करते हैं ताकि वे भी उसी के समान अस्पताल चीन में स्थापित कर सकें। अरविन्द संस्थान बांग्ला देश में पांच अस्पताल स्थापित करने हेतु वहां के ग्रामीण बैंक के साथ कार्य रहा है। ये पांच अस्पताल ग्रामीण बैंक अरविन्द नेत्रा चिकित्सा अस्पताल के नाम से जाने जाएंगे। प्रशिक्षण चिकित्सकों की कमी को दूर करने के लिए अरविन्द संस्थान ने अरविन्द



डॉ एस शिवराम, निदेशक एनसीएल स्वागत सम्बोधन देते हुए

नेत्रा चिकित्सा अस्पताल एवं स्नातकोत्तर नेत्रा चिकित्साविज्ञान संस्थान की स्थापना की है। डॉ नामपेरूमलसामी ने बताया कि हम रोगियों के आने की प्रतीक्षा नहीं करते, बल्कि हम स्वयं रोगियों के पास जाकर नेत्रा चिकित्सा शिविरों में उनकी पहचान करके उनके रोग की जांच करते हैं। वर्ष 2006 में अरविन्द संस्थान में पांच अस्पतालों ने मिलकर कुल 1400 नेत्रा चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया था। तमिलनाडु राज्य में मोतियाबिन्द की होने वाली कुल शल्यचिकित्सा में से 40 प्रतिशत शल्यचिकित्सा अरविन्द नेत्रा चिकित्सा संस्थान द्वारा की जाती है। अरविन्द नेत्रा चिकित्सा संस्थान द्वारा विकसित पद्धति से उनके चिकित्सक वर्ष में औसतन 2000 शल्यचिकित्सा कर लेते हैं जबकि दूसरे अस्पतालों में एक चिकित्सक प्रतिवर्ष औसतन केवल 250 से 300 शल्यचिकित्सा ही कर पाता है। अरविन्द संस्थान अपनी सफलता का श्रेय अपने लगभग 900 सहायक चिकित्सा स्टाफ को देता है। अरविन्द संस्थान ने वर्ष 2006 तक 20 लाख 70,000 शल्यचिकित्साएं की हैं जिनमें से मोतियाबिन्द की 2,50,000 शल्यचिकित्साएं केवल वर्ष 2006 में की गईं। यहां प्रतिदिन लगभग 6000 मरीजों का उपचार किया जाता है

तथा 850 शल्यचिकित्साएं की जाती हैं। देश के 210 अस्पतालों को नेत्रा चिकित्सा के क्षेत्र में अपनी क्षमता विकसित करने के लिए अरविन्द संस्थान सहायता प्रदान कर रहा है तथा ऐसे अस्पतालों की संख्या बढ़ती ही जा रही है।

डॉ नामपेरूमलसामी ने आगे बताया कि नेत्रा चिकित्सा का अरविन्द मॉडल विकसित करने के बाद हमने उसे अपने तक ही सीमित नहीं रखा है, बल्कि इस ज्ञान का हम देश तथा विदेश में भी प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। हमने अपना ज्ञान एवं विशेषज्ञता दूसरों को भी प्रदान करने हेतु अरविन्द समाज नेत्रा चिकित्साविज्ञान संस्थान की स्थापना की है। हम आंखों के भीतर लगाए जाने वाले (इन्ट्राऑकुलर) लेन्स जिनका मूल्य 75 से 100 डॉलर है, अपने रोगियों को देना जारी नहीं रख सके। अतः नेत्रा रोगियों को किफायती मूल्य में लेस उपलब्ध कराने हेतु अरविन्द संस्थान ने उनका निर्माण आरंभ किया और 2 डॉलर प्रति लेस की दर से उन्हें रोगियों को उपलब्ध करा कर भी अधिक लाभ कमाया। अब इन लेसों का 136 देशों को निर्यात किया जा रहा है।

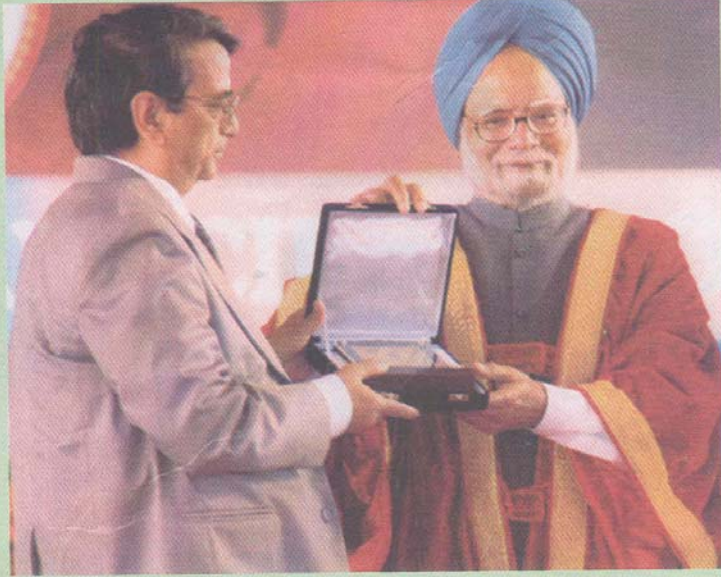
डॉ एस शिवराम, निदेशक एनसीएल ने

अपने स्वागत सम्बोधन में प्रो. तिलक द्वारा एनसीएल, रसायन उद्योग एवं समाज को दिए गए महत्वपूर्ण योगदान को याद किया। प्रो. तिलक ने एनसीएल को शैक्षणिक प्रयोगशाला से रसायन उद्योग एवं समाज को उन्नति हेतु मौलिक योगदान देने वाली प्रयोगशाला में परिवर्तित किया। प्रो. तिलक, जो एक सुप्रतिष्ठित कार्बनिक रसायनज्ञ थे, ने विश्वविद्यालय के रासायनिक प्रौद्योगिकी विभाग, मुंबई में रंजक रसायनविज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रोफेसर के रूप में बहुत ही सफल कैरियर के बाद महत्वपूर्ण समय में एनसीएल में कार्यभार संभाला था। डॉ शिवराम ने आगे कहा कि हम प्रो. वी डी तिलक, जो इस प्रयोगशाला के निर्माताओं में से एक थे, को याद करते हुए एनसीएल में **राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस** मनाते हैं। इस अवसर पर हम उन सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित करते हैं जिन्होंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के माध्यम से समाज के उत्थान हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया है। प्रो. तिलक ने एनसीएल के निदेशक के पद से सेवानिवृत्ता होने के बाद दो दशकों तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा समाज के कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया था। डॉ नामपेरूमलसामी का श्रोताओं को परिचय देते हुए डॉ शिवराम ने कहा कि जिस संगठन के वे प्रमुख हैं उसकी स्थापना ही लाखों दृष्टिहीनों के अंधकारमय जीवन को पुनः प्रकाशमय बनाने के महान उद्देश्य के साथ की गई थी। अरविन्द नेत्रा चिकित्सा संस्थान प्रणाली विश्व में केवल एक सबसे बड़ी नेत्रा चिकित्सा सुविधा ही नहीं है बल्कि सर्वाधिक उत्पादन एवं कार्यक्षम संस्था भी है जो इन्ट्राऑकुलर लेन्स के शुल्क सहित केवल रु. 1250/- में प्रति वर्ष 2,00,000 से अधिक आंखों के ऑपरेशन करती है।

डॉ वी पी डिमरी आई एस सी ए के डी पी चटर्जी पुरस्कार से सम्मानित

डॉ मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री, भारत सरकार ने डॉ वी पी डिमरी, निदेशक, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (एन जी आर आई), हैदराबाद को चिदम्बरम में आयोजित 94वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस (आइ एस सी) के दौरान जी पी चटर्जी पुरस्कार से सम्मानित किया। डॉ डिमरी ने भूभौतिकी के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के लिए यह पुरस्कार प्राप्त किया है। भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन ने वर्ष 1981 में इस पुरस्कार की स्थापना प्रतिवर्ष एक विशिष्ट वैज्ञानिक को विज्ञान तथा मानव के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए की थी।

डॉ डिमरी को भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसिएशन के जनवरी 2008 में विशाखापट्टणम में आयोजित 95वें सत्रा के लिए भू प्रणाली विज्ञान क्षेत्रा के लिए अध्यक्ष भी चुना गया। भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के फेलो, डॉ डिमरी, तेल, खनिज तथा भूजल व सिसमोलॉजी के क्षेत्रा में गणितीय माडलिंग तथा फ्रेक्वल थियरी का प्रयोग कर जिसे उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों में सूचीबद्ध किया है, अतुलनीय योगदान देने वाले अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त भू भौतिकविद् हैं। उनके 150 वैज्ञानिक तथा तकनीकी प्रपत्रा विभिन्न राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।



डॉ वी पी डिमरी, निदेशक, एन जी आर आई, डॉ मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री, भारत सरकार से प्रतिष्ठित प्रो. जी पी चटर्जी पुरस्कार प्राप्त करते हुए

डॉ डिमरी 17 अक्टूबर 2001 को एन जी आर आई के निदेशक पद पर नियुक्त हुए थे तथा तब से वे एन जी आर आई का नेतृत्व कर उसे आगे बढ़ा रहे हैं। उनके नेतृत्व में संस्थान को आइ एस ओ 9001 : 2000 प्रमाणपत्रा तथा विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में उत्कृष्ट योगदान के लिए फिक्की पुरस्कार (2001-2002) भी मिल चुका है। आज एन जी आर आई को सी एस आई आर की 38 प्रयोगशालाओं के मध्य बाह्य वित्ता प्रवाह उत्सर्जित करने के लिए प्रथम स्थान प्राप्त है तथा वह सी एस आई आर के कुल

बाह्य वित्ता प्रवाह का दसवां हिस्से का अर्जन कर पिछले दो वित्तीय वर्षों में दूसरे स्थान पर है। डॉ डिमरी हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा आंग्र विश्वविद्यालय के भूभौतिक विभाग के अवैतनिक प्रोफेसर भी हैं। वे भारतीय भू-चुम्बकीय संस्थान, मुम्बई की सलाहकार परिषद् के अध्यक्ष तथा विभिन्न भू विज्ञान संस्थानों की अनुसंधान परिषद् के सदस्य भी हैं। वे इंटरनेशनल यूनियन ऑफ जियोडेसी एण्ड जियोफिजिक्स के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा भारतीय भू-भौतिकीय यूनियन के अध्यक्ष भी हैं।

एन ई आई एस टी - उद्योगों तथा अन्य प्रयोक्ताओं की सेवा में

पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (पूर्व में क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला), जोरहाट द्वारा सम्पूर्ण की गयी परामर्शक परियोजनाओं में सम्मिलित हैं -

- दुलिपाजान पावर स्टेशन पर नये गैस टरबाइन स्थापना के लिए भूप्रौद्योगिकी अन्वेषण।
- लौह अयस्क नमूनों का अद्यतनीकरण/हितलाभ/मैसर्स त्रिबेनी मेटालॉएस प्रा. लिमिटेड, मोतीलाल नेहरू रोड, पनबाजार, गुवाहाटी को अन्तिम रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी।
- नागालैण्ड के द्विविमीय पत्थरों के छह नमूनों का मूल्यांकन। अन्तिम रिपोर्ट भू विज्ञान तथा खान निदेशक, नागालैण्ड सरकार, दीमापुर को प्रस्तुत की गयी।

भूविज्ञान तथा खान निदेशालय, नागालैण्ड सरकार, दीमापुर की ओर से तुंगसेग जिले के कोन्या कोयले से कोक ब्रीज के निर्माण पर पूर्व संभाव्यता अध्ययन रिपोर्ट की तैयारी के लिए एक नयी परामर्श परियोजना आरम्भ की गयी।

जारी की गई प्रक्रिया

श्री भास्कर बोइस्या, गोतानगर, जालुकवारी, गुवाहाटी को कम धूल वाली चाक पैसिल के लिए संस्थान की प्रक्रिया जारी की गई।

सहमति पत्रा हस्ताक्षर

एन ई आई एस टी ने निम्नलिखित के साथ सहमति पत्रा पर हस्ताक्षर किये हैं -

एन ई आई एस टी ने स्टेट मेडिसिनल प्लान्ट्स बोर्ड, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड की एक सहायक एजेंसी से एक सहयोगात्मक प्रबंध के अन्तर्गत उसका औषधीय तथा संगंध पादप सेक्टर के रोड मैप की तैयार करने के लिए।

ओ एन जी सी, शिवसागर के साथ (अ) अममूरी (ब) गलेकी पर कूड ऑयल कन्टेमिनेटेड ड्रिल साइट में वनस्पतियों के विकास के लिए। जियोटेक कन्सल्टेन्ट्स (प्रा.) लिमिटेड, नई दिल्ली के साथ एन आर एल रिफाइनरी साइट पर मृदा प्रतिरोधकता जांच के संचालन हेतु।

नवीन आर एण्ड डी सुविधाएं

एन ई आई एस टी में आर एण्ड डी सुविधाओं को जी सी एम एस के संस्थापन के साथ आगे निम्नलिखित गुणों के साथ आगे लगाया गया है -

- 1-1.050 एमयू का मास रेंज
- 10,000 एमयू/से. तक की स्कैन गति (प्रोफाइल तथा सेन्ट्रॉइड)

- ध्वनि में कटौती के लिए वक्रित प्रीफिल्टर
- विस्तारित कठोरता तथा अति संवेदनशीलता के लिए आर्बन ब्राइट सोर्स
- अच्छे प्रदर्शन के लिए 10 के वी कन्वरजन डायोड
- वृहद स्पैक्ट्रल/मात्रात्मक डॉयनामिक रेन्ज
- ई 1 तथा सी C1 के लिए स्थानान्तरणीय आयन वॉल्यूम
- स्वचालित ई/ C1 परिचालन के लिए कन्ट्रिब्यूशन आयन वाल्यूम
- शक्तिशाली एक्सकेलिबर डेटा सिस्टम मास स्पेक्ट्रोमीटर प्रदान करती है
- पुरस्तकालय खोज सूचना - अज्ञात को चिधित करने के लिए ई 1 माध्यम
- आण्विक भार पुष्टि के लिए पी सी आई
- वैकल्पिक संवेदनशीलता तथा चयन के लिए एन सी आई
- एकल विश्लेषण में साथ-साथ फुल स्कैन तथा एस आई एम
- पी पी आई एन आई सी आई - हार्डवेयर/सॉफ्टवेयर/ सॉफ्टवेयर विकल्प
- नमूना स्क्रिनिंग के लिए पीसीआई/एनसी आई।

लेखा कैडर के सहायकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

एन ई आई एस टी ने मानव संसाधन विकास केन्द्र, गाजियाबाद के सहयोग से सी एस आई आर प्रयोगशालाओं के पूर्वी जोन के लेखा कैडर के सहायकों के लिए तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कुल 29 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए स्रोत व्यक्ति सी एस आई आर मुख्यालय, एच आर डी सी, गाजियाबाद

तथा आयोजक प्रयोगशाला द्वारा चुने गये थे जिनमें श्री एस.एन. शर्मा, श्री आर.एल. शर्मा, श्री ए. वाहिद, श्री पद्म सिंह तथा डा. पी जी रॉव, निदेशक, एन ई आई एस टी सम्मिलित हैं। इन्होंने निम्नलिखित विषयों पर व्याख्यान दिये (1) सी एस आई आर में वित्त एवं लेखा की भूमिका (2) लेखा परीक्षा के विभिन्न प्रकार (3) वर्क तथा प्रोक्चोरमेंट से सम्बन्धित भुगतान

(4) बैंक रिफॉन्सिलेशन (5) इम्पैक्ट को समझना तथा परिचालन (6) इम्पैक्ट - लेखा (7) इम्पैक्ट - एम आई एस रिपोर्टिंग (8) इम्पैक्ट - प्रोजेक्ट एकाउंटिंग (9) प्रोजेक्ट परियोजना लागत (10) वित्तीय योजना तथा प्रबंधन - एन ई आई एस टी, जोरहाट में व्यावहारिक चलन (11) मेडिकल क्लेम + टी ए (12) पैशन तथा (13) बजट + एल टी सी।

पूर्वोत्तर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एन ई आई एस टी), जोरहाट

पूर्वोत्तर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (एन ई आई एस टी), जोरहाट में एक बैठक आयोजित की गयी जिसमें आमंत्रित अतिथियों, प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, उद्यमियों मीडिया के लोगों, विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के अतिरिक्त संस्थान के वैज्ञानिकों ने भी भाग लिया। डा बी डी कुलकर्णी, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एन सी एल), पुणे तथा प्रो. के. ए. नटराजन, भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगालुरु मुख्य अतिथि तथा माननीय अतिथि थे। डा. पी जी राव, निदेशक, एन ई आई एस टी ने बैठक की अध्यक्षता की। डा. आर के शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' ने विशिष्ट अतिथियों तथा उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया। डा. पी आर भट्टाचार्य तथा डा. आर के अखिकारी, वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने वक्ताओं का संक्षिप्त परिचय दिया।

डा. कुलकर्णी ने 'केमिकल प्रोसेस डिजाइनिंग, बायोरियेक्टर्स इत्यादि' पर अपना भाषण देते हुए विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं तथा बायोरियेक्टरों के अभिकल्पन पर विस्तार से चर्चा की। प्रो. नटराजन ने 'माइक्रोल्स, मिनरल्स एण्ड एन्वायरमेंट एण्ड वेनेफिसियेशन ऑफ मिनरल्स बाय माइक्रोब्स' पर एक उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने खनिज हितलाभ के लिए आजकल प्रयुक्त की गयी खनिज संसाधन तथा जैविक उपचारक प्रौद्योगिकी के बायोलीचिंग प्रक्रिया तथा बायोमाइमेट्रिक योजनाओं की व्याख्या की।

अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी में डा. राव ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की विषय वस्तु पर बात की तथा पिछले वर्षों में एन ई आई एस टी की उपलब्धियों के विषय में संक्षिप्त व्याख्यान दिया।

इससे पहले संस्थान ने 'ओपन डे' का आयोजन किया। भारी संख्या में विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा अन्य जन समूह ने प्रातः काल में प्रयोगशाला का निरीक्षण किया तथा संस्थान में चल रही अनुसंधान गतिविधियों को देखने के लिए विभिन्न विभागों का दौरा किया और वैज्ञानिकों से वार्ता की।

संगंध पौधों की कृषि पर प्रशिक्षण - सह - जागरूकता कार्यक्रम

एन ई आई एस टी ने डी बी टी प्रायोजित परियोजना के अन्तर्गत पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न स्थानों पर संगंध पौधों की कृषि पर प्रशिक्षण - सह - जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन करना जारी रखा है। अभी हाल ही में बोडो टेरेस्टोरियल एरिया डिस्ट्रिक्ट (बी टी ए डी), असम के जेलकाझार, बोंगईगांव, बेटबारी, पानीटैकी तथा तमलपुर में गांव-गांव जा कर प्रशिक्षण सह प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया।

प्रत्येक ग्राम के 10 किसानों ने इसमें भाग लिया तथा प्रतिभागियों की कुल संख्या 50 थी। सिट्रोनेला, लेमनग्रास तथा पैचोली की खेती तथा प्रसंस्करण पर प्रशिक्षण दिया गया। श्री भुपेन राय, पूर्व विधायक, असम ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। आरम्भिक खेती के लिये मुफ्त में पौध रोपण सामग्री वितरित की गयी। कार्यक्रम में दो गैर सरकारी संगठनों यथा मानव शक्ति जागरण, नालबाड़ी और प्रयास रंगिया, कामरूप ने सामाजिक आर्थिक विकास के लिए संगंध पौधों की खेती करने के लिए ग्रामीण लोगों को प्रोत्साहित करने में सहायता प्रदान की। डा टी सी सर्मा, प्रमुख अन्वेषक, डी बी टी परियोजना ने कार्यक्रम का समन्वयन किया। बोंगईगांव में 10 हेक्टेयर क्षेत्र में सिट्रोनेला की खेती की गई है।

डा एन सी बरुआ को सी आर एस आई कांस्य पदक

पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (एन ई आई एस टी), जोरहाट के प्राकृतिक उत्पाद रसायन विभाग के प्रमुख तथा वैज्ञानिक 'एफ' डा. एन सी बरुआ को केमिकल रिसर्च सोसायटी ऑफ इंडिया (सी आर एस आई), द्वारा वर्ष 2007 के लिए रसायन विज्ञान में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए कांस्य पदक प्रदान किया गया है। उनका प्रमुख योगदान जैव सक्रिय प्राकृतिक उत्पादों के सम्पूर्ण संश्लेषण के क्षेत्र में है। पिछले कई वर्षों के दौरान उन्होंने स्टिरियोसिलेक्टिव रूप में बहुत से प्राकृतिक पदार्थों का संश्लेषण किया है तथा उनके विभिन्न अनुसंधान प्रपत्र प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।



स्कूली बच्चों के लिए छठा सीएसआईआर हीरक जयंती आविष्कार पुरस्कार (सीडीजेआईए-2007)

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) भारत का प्रमुख औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास संगठन है। वर्ष 2002 में अपनी हीरक जयंती के अवसर पर सीएसआईआर ने स्कूली बच्चों के लिए आविष्कार पुरस्कारों की शुरुआत की थी ताकि बच्चों में बौद्धिक सम्पदा के प्रति जागरूकता, रुचि और प्रोत्साहन का संचार किया जा सके।

समूचे विश्व में 26 अप्रैल को मनाए जाने वाले विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस के अवसर पर सीएसआईआर 'स्कूली बच्चों के लिए छठे सीएसआईआर हीरक जयंती आविष्कार पुरस्कार (सीडीजेआईए)' के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। प्रथम पुरस्कार विजेता वाइपो के युवा आविष्कारक पुरस्कार के लिए भी पात्र होगा जिसमें पुरस्कार स्वरूप एक पदक एवं प्रमाण पत्र दिया जाता है।

आवेदक को इस पुरस्कार के लिए प्रस्तुत आविष्कार का विवरण हिंदी अथवा अंग्रेजी में देना होगा जिसकी शब्द सीमा 5000 से अधिक नहीं होगी, साथ ही इसका सार (100 शब्दों से अधिक नहीं) देना होगा, जो एक अलग कागज पर निर्मांकित व्यक्तिगत ब्यौरे : नाम, जन्म की तारीख, स्कूल तथा आवासीय पता, कक्षा, टेलीफोन सं. (आवास/स्कूल), ई-मेल पता सहित उस स्कूल के प्रधानाचार्य/प्रधान द्वारा प्रमाणित (मोहर तथा तारीख सहित) और उनके माध्यम से भेजना होगा, जहां वह विद्यार्थी नामांकित है।

राज्य, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अथवा समकक्ष पुरस्कारों के लिये पहले से चर्चित प्रस्तावों के मामले में सीडीजेआईए-2007 के विचारार्थ केवल ऐसे विषयों को ही प्रस्तुत किया जाये जिनमें उन्नयन किया गया हो।

पुरस्कार के लिये उन्हीं आवेदनों पर विचार किया जायेगा जिनके साथ अपेक्षित ड्राइंग और हिंदी अथवा अंग्रेजी में अधिकतम 5000 शब्दों में आविष्कार का विवरण संलग्न होगा। इस विवरण में आविष्कार की नवीन एवं अ-प्रकट विशिष्टताओं और इससे होने वाले लाभों का विशेष उल्लेख करते हुए विषय विशेष का समस्या-समाधान विधि से निरूपण होना चाहिये।

किसी भी भारतीय स्कूल में पढ़ने वाला 31 जुलाई, 2007 को 18 वर्ष से कम उम्र का कोई भी विद्यार्थी आवेदन कर सकता है।

प्रस्तुत आविष्कार सांख्यिकीय रूप से नवीन, अ-प्रकट तथा उपयोगी होना चाहिये। यह आविष्कार एक नई संकल्पना अथवा विचार या किसी वर्तमान समस्या का समाधान अथवा पूर्णतः एक नई विधि/प्रक्रिया/युक्ति/उपयोगिता हो सकता है। यह अनिवार्य/आवश्यक नहीं है कि आविष्कार को मूल रूप दिया गया हो, उस आविष्कार को संकल्पना को केवल मॉडल, प्रोटोटाइप अथवा प्रयोगात्मक आंकड़ों द्वारा सिद्ध किया हुआ होना चाहिये। अध्यापकों/माता-पिता/मित्रों अथवा अन्यो के द्वारा प्रदत्त सहायता/मार्गदर्शन का उचित रूप से उल्लेख किया जाना चाहिये और उनके प्रति आभार प्रकट किया जाना चाहिये।

टंकित आवेदन पंजीकृत डाक/कुरियर द्वारा प्रधान, बौद्धिक सम्पदा प्रभाग, सीएसआईआर निस्केयर बिल्डिंग, 14, सतसंग विहार मार्ग, स्पेशल इस्टिड्यूशनल एरिया, नई दिल्ली - 110 067 को भेजे जायें तथा लिफाफे के ऊपर बायें कोने पर 'सीडीजेआईए-2007' लिखा होना चाहिये। आप अपना आवेदन ई-मेल द्वारा भी इस पते head.ipmd@niscsir.res.in पर भेज सकते हैं।

दिनांक 15 अगस्त, 2007 को अथवा उससे पहले प्राप्त आवेदनों पर ही पुरस्कार हेतु विचार किया जाएगा।

पुरस्कार: कुल मिलाकर 60 पुरस्कार हैं। प्रमाणपत्र सहित निम्नवत् नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे:

प्रथम पुरस्कार (1)	रुपये 50,000/-
द्वितीय पुरस्कार (2)	प्रत्येक रुपये 25,000/-
तृतीय पुरस्कार (3)	प्रत्येक रुपये 15,000/-
चतुर्थ पुरस्कार (4)	प्रत्येक रुपये 10,000/-
पंचम पुरस्कार (50)	प्रत्येक रुपये 5,000/-

पुरस्कार विजेताओं का चयन एक उच्चस्तरीय चयन समिति द्वारा किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर इन छोटे गार अभ्यर्थियों को दिल्ली अथवा किसी अन्य उपयुक्त स्थान पर साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। पुरस्कार चयन समिति/सीएसआईआर का निर्णय अंतिम होगा तथा आवेदकों के लिए बाध्यकारी होगा। इस बारे में किसी भी प्रकार की पूछताछ/पत्राचार पर विचार नहीं किया जायेगा।

इन पुरस्कारों की घोषणा सीएसआईआर के स्थापना दिवस, 26 सितंबर, 2007 को नई दिल्ली में की जायेगी तथा इसकी सूचना केवल पुरस्कार विजेताओं को ही भेजी जायेगी।

अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.csir.res.in देखें।

राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएं, बंगालुरु में हिन्दी कार्यशालाएं

एन ए एल में दो हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इनमें से एक जो हर तिमाही में आयोजित की जाने वाली कार्यशालाओं की कड़ी में से थी और दूसरी जिसमें सीएसआईआर से एन ए एल के निरीक्षण पर आये डा. पूरनपाल ने प्रतिभागियों को सम्बोधित किया।

अप्रैल-जून 2007 तिमाही के दौरान 23.5.2007 को ग्रुप-II के कर्मचारियों के लाभार्थ एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। एन ए एल की वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक श्रीमती रमा महादेव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और एन ए एल के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डा. प्र. श्री मूर्ति ने हिन्दी के सरल प्रयोग के कुछ उपाय सुझाये।

प्रतिभागियों से अपील की गई कि वे अपने दैनिक सरकारी कामकाज (लॉग-बुक/मशीन रखरखाव रजिस्टर आदि) में हिन्दी का प्रयोग करें। आपस में वार्तालाप हिन्दी में करने की आदत डालें और साथ ही रोज उपस्थिति रजिस्टर में हस्ताक्षर हिन्दी में करें।

राजभाषा पुनरभिमुखीकरण

एन ए एल में दिनांक 25.5.2007 को प्रभागीय राजभाषा प्रतिनिधियों और सहायकों के लिए राजभाषा पुनरभिमुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सीएसआईआर के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डा. पूरन पाल ने राजभाषा नीति के अंतर्गत अधिकारियों/कर्मचारियों की भूमिका तथा उनके उत्तरदायित्व के बारे में अत्यंत सारगर्भित व्याख्यान दिया।

डा. पूरन पाल ने कहा कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग संवैधानिक अनिवार्यता है और इस दिशा में प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी का स्वैच्छिक प्रयास परम आवश्यक है। जो काम हम दिल से रुचि लेकर निष्ठा के साथ करते हैं वह कभी कठिन नहीं लगता। इस अवसर पर एन ए एल की वरिष्ठ प्रशासन नियंत्रक श्रीमती रमा महादेव ने स्वागत; और वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डा. प्र. श्री मूर्ति ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। श्रीमती नेलन तोपनो, सहायक- हिन्दी अनुभाग ने इन दोनों कार्यशालाओं का सफल संचालन किया।

स्वयं सहायता समूह के लिए मशरूम की खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

एन ई आई एस टी शाखा, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश ने लेगोंग अरुणाचल फार्मर्स वेलफेयर सोसायटी, माइरेम विलेज के साथ संयुक्त रूप से डी बी टी प्रायोजित परियोजना के अन्तर्गत खाद्य मशरूम की खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। कुल मिलाकर बिलाट तथा रस्किन क्षेत्रा के 22 महिला स्वयं सहायता समूह के 225 सदस्यों ने अरुणाचल प्रदेश के रस्किन क्षेत्रा के बिलाट ग्राम में आयोजित प्रशिक्षण में भाग लिया। प्रतिभागियों के लिये खाद्य मशरूम की उत्पादक प्रौद्योगिकी का प्रदर्शन किया गया तथा प्रशिक्षण दिया गया। श्री ओमक अपांग, स्थानीय विधायक, आंध्र प्रदेश तथा पूर्व केन्द्रीय मंत्री ने समारोह की शोभा बढ़ाई तथा मशरूम खेती कार्यक्रम में गहरी रुचि व्यक्त की तथा मशरूम की स्थानीय रूप से उपलब्ध जंगली किस्मों को खोजने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने महिला स्वयं सहायता समूहों को सामाजिक आर्थिक विकास के लिए मशरूम की व्यवस्थित खेती करने की सलाह दी तथा पुरानी गतिविधियों को त्यागने की भी अपील की। उन्होंने बी डी ओ को खाद्य मशरूम की व्यावसायिक कृषि के लिए एन ई आई एस टी की शाखा के साथ परियोजना आरम्भ करने का सुझाव भी दिया। श्री पी बी चेन्नी, ब्रांच मैनेजर, ग्रामीण बैंक, रस्किन ने भी स्वयं सहायता समूह को उपरोक्त कार्य के लिए माइक्रोफाइनेंस देने का भरसा दिलाया।

कलाचन्द्र सैन को राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार

डॉ कलाचन्द्र सैन, वैज्ञानिक ई-II तथा प्रभारी, गैसहाइड्रेट ग्रुप, राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद को खान मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार-2005 से उनके भूविज्ञान के क्षेत्रा में महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया है। इस पुरस्कार में नकद पुरस्कार स्मृति चिह्न, प्रमाणपत्रा तथा प्रशस्तिपत्रा सम्मिलित हैं।

डॉ सैन ने हाइड्रोकार्बन के, जिसमें गैस हाइड्रेट्स तथा कृस्टल डायनेमिक्स सम्मिलित हैं के, समेकित प्रतिलोमक्रम कलन पर आधारित बहुत सी तकनीकें प्रस्तावित की हैं। इनमें प्रमुख है (i) वाइडएंगल सिसमिक डेटा का प्रयोग कर (अ) छिपे हुए तथा (ब) सिसमिक रिफ्लेक्शन वर्क की बेग प्रतिलोम क्रम समस्याओं का समाधान (ii) सिसमिक डेटा के प्रथम आगमन की व्याख्या करने के लिए नवीन सोच (iii) सीधे मापने की विधि (अ) अन्तराल वेग की गणना के लिए (ब) वाइड एंगल सिसमिक डेटा से किसी भी रिफ्लेक्टर की गहराई का अनुमान लगाना : (iv) ट्रेवल टाइम टोमोग्राफी पर आधारित सिसमिक डेटा द्वारा वांछित संरचना का मूल्यांकन करना (v) 2-डी वेबफार्म प्रतिलोकक्रम का प्रयोग करके फाइन-स्केल स्ट्रक्चर अथवा स्ट्रेटिग्राफिक हॉरिजन को चित्रित करना।



केंद्रीय खान मंत्री श्री सीसराम ओला से राष्ट्रीय खनिज पुरस्कार प्राप्त करते हुए डॉ कलाचन्द्र सैन, चित्र में दिखाई दे रहे अन्य व्यक्ति है श्री युव्यारामी रेड्डी, राज्य खान मंत्री

डॉ सैन ने (i) गैस हाइड्रेट्स (भविष्य की सक्षम नवीनतम ऊर्जा स्रोतों) की खोज भारत के महाद्वीपीय अन्तर के साथ नवीनतम सिरामिक डेटा संसाधन तथा नवीनतम पूर्ण वेब फॉर्म प्रतिलोम क्रम के प्रयोग द्वारा करना; (ii) सौराष्ट्र क्षेत्रा में तथा महानदी डेल्टा के गोडवाना तलछट में हाइड्रोकार्बन प्रोस्पेक्टिव मीजोजोइक तलछट इमेजिंग वाइड एंगल सिसमिक डेटा के आधुनिक ट्रेवल टाइम टॉमोग्राफी के द्वारा करना जैसे बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

उन्होंने जबलपुर (1997) तथा भुज (2001) में भूकम्पों की उत्पत्ति के

संभावित कारणों तथा विभिन्न भौगोलिक/टेक्टोनिक इकाईयों जैसे नर्मदा सन लिनियामेंट, बंगाल की खाड़ी, महानदी डेल्टा, दक्षिणी ग्रेनुलाईट टैरेन, पश्चिम धारवाड़ इत्यादि की उत्पत्ति की क्रिया को वाइड एंगल सिसमिक डेटा के विश्लेषण के आधार पर समझने में प्रकाश डाला है।

उन्होंने (i) क्यू फैक्टर का अनुमान लगाने (ii) बी एस आर से ट्रेवल टाइम तथा एम्प्लीट्यूड का संयुक्त प्रतिलोम क्रम, (iii) गैस हाइड्रेट्स के स्रोत सक्षमता को चिह्नित तथा परिमाणित करने के दृष्टि कोण के साथ एसी ओ

एट्रीब्यूट विश्लेषण करना जैसी विधियां प्रस्तावित की हैं। प्रभावी माध्यम सिद्धांत (Effective Medium Theory) पर उनका हाल ही का कार्य माइक्रोस्ट्रक्चर को समझने तथा गैस हाइड्रेट्स के परिमाणित मूल्यांकन के सर्वथा प्रशंसनीय है।

डॉ. सैन के 48 अनुसंधान प्रपत्रा तथा 10 तकनीकी रिपोर्ट राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। वे अत्यधिक प्रेरणशील सुप्रसिद्ध युवा वैज्ञानिक हैं जिन्हें कई सम्मान प्राप्त हुए हैं :

- (i) सी एस आई आर का युवा वैज्ञानिक पुरस्कार तथा रामन फैलोशिप।
- (ii) डी एस टी बॉयजकास्ट फैलोशिप तथा स्वर्णजयन्ती पुरस्कार।
- (iii) इंडियन जियोफिजिकल यूनियन का कृष्णन स्वर्ण पदक तथा लाइफ फैलोशिप।
- (iv) ए पी एकेडमी ऑफ साइंसेज द्वारा एसोसिएट फैलो तथा सर्वश्रेष्ठ प्रपत्रा पदक।
- (v) ऑयल तथा गैस पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन पेट्रोटेक 2007 में सर्वश्रेष्ठ प्रपत्रा प्रस्तुतकर्ता पुरस्कार इत्यादि।

वे बहुत सी वैज्ञानिक सोसायटियों/निकायों, तकनीकी समितियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान पत्रिकाओं के सम्पादकीय मंडल के सदस्य हैं।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों यथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी भाषा में ही संपादक, सीएसआईआर, समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक, सीएसआईआर समाचार

ईमेल: deeksha@niscair.res.in

निस्केयर

उपलब्ध कराता है आपकी आवश्यकता के अनुरूप ज्ञान आधारित सेवाएं

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), सीएसआईआर वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी सूचना प्रबंधन प्रणाली तथा सेवाओं का नेतृत्व करने वाला प्रामाणिक संस्थान है

- औषधीय एवं संगंध पादप सूचना सेवा - वैल्थ ऑफ इंडिया तथा मापा डेटाबेसों पर आधारित सेवा। अनुसंधानकर्ताओं, उद्यमियों, उद्योगपतियों, कृषकों तथा सरकारी एजेन्सियों के लिए एक आदर्श सेवा।
- पहचान सेवा - औषधीय महत्व के पादपों/अपरिष्कृत औषध सामग्री की पहचान के लिए।
- कन्टेंट्स, एक्सट्रैक्ट्स एवं फोटोकॉपी सेवा - आवश्यकता आधारित।
- साहित्य खोज सेवा - 6000 से अधिक अन्तरराष्ट्रीय डेटाबेसों पर सुलभता।
- वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुवाद सेवा - जापानी, जर्मनी, फ्रांसीसी, स्पेनी, चीनी तथा रूसी भाषा से अंग्रेजी में।
- बिब्लियोमेट्रिक सेवाएं - विशिष्ट विषयों के लिए।
- परामर्शक सेवाएं - अभिकल्पन, संपादन तथा प्रकाशन। पुस्तकालय पुनर्गठन/स्वचलन/आधुनिकीकरण। डेटाबेस अभिकल्पन तथा विकास। उत्कृष्ट ग्राफिक आर्ट, प्रोडक्शन तथा मुद्रण सुविधाएं।
- पारम्परिक ज्ञान अंकीय पुस्तकालय (टीकेडीएल)
- राष्ट्रीय विज्ञान अंकीय पुस्तकालय (एनएसडीएल)

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- एसोसियेटशिप इन इन्फॉर्मेशन साइंस (एआइएस)
- अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम - सूचना विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी/कम्प्यूटर अनुप्रयोग/तकनीकी लेखन/हार्डवेयर तकनीकें।

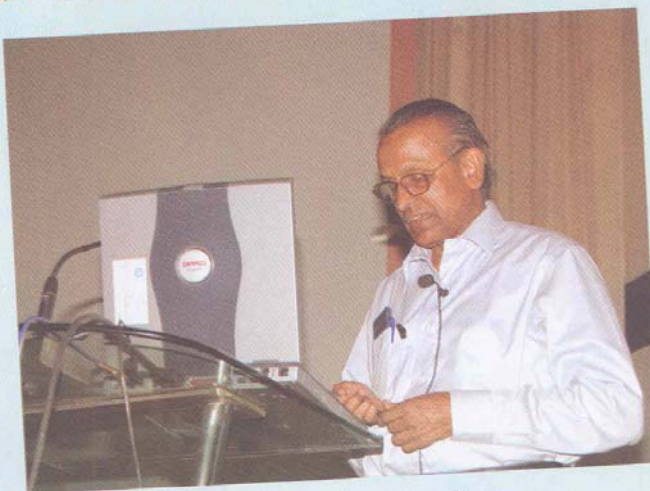
अधिक जानकारी लिए सम्पर्क करें -
निदेशक
राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
निस्केयर

*डॉ. के.एस. कृष्णन्, मार्ग, नई दिल्ली-110 012 एवं
सत्संग विहार मार्ग, नई दिल्ली-110 067
ई मेल: director@niscair.res.in
दूरभाष: *25846024, *25848385, 26517059
फैक्स: *25847062, 26862228



एन सी एल में डॉ नागराजन द्वारा प्रो. वेंकटरामन व्याख्यान

डॉ के नागराजन, कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास सलाहकार, हिकल अनुसंधान एवं विकास केन्द्र बंगालुरु ने 7 जून, 2007 को राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे में छठा प्रोफेसर के वेंकटरामन स्मृति व्याख्यान दिया। प्रो. वेंकटरामन, जो एनसीएल के प्रथम निदेशक थे, ने कार्बनिक संश्लेषण के क्षेत्र में तथा रंजक उद्योग हेतु औद्योगिक दृष्टि से महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं के विकास में प्रारम्भिक योगदान दिया था। अपने सहयोगियों के बीच वे केवी के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके द्वारा रंजक एवं रंजक मध्यकों का रसायनविज्ञान पर लिखे गए सात खण्डों वाले शोधप्रबंध को उत्कृष्ट पुस्तक के रूप में सराहा गया है। प्रो. वेंकटरामन द्वारा कमरे के तापमान पर फ्लेवोन्स के संश्लेषण में किए गए योगदान के कारण भारत के कार्बनिक रसायनज्ञों के बीच उन्हें इस आशय की एक दुर्लभ प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है कि उनकी इस अभिक्रिया को उनका नाम - बेकर-वेंकटरामन रिअर्रेंजमेंट दिया गया है। डॉ नागराजन ने कार्बनिक रसायन अनुसंधान में प्रयास सतही परन्तु उतने सतही नहीं नामक विषय पर व्याख्यान दिया।



डॉ नागराजन, प्रो. वेंकटरामन व्याख्यान देते हुए

डॉ नागराजन ने के वेंकटरामन के साथ अपने पुराने सम्बन्धों को याद करते हुए कहा कि किस प्रकार वे उनके सम्पर्क में आए तथा बाद के वर्षों में उनके सम्बन्ध कैसे बढ़ते गए। उन्होंने अपने व्याख्यान का आरंभ प्रो. वेंकटरामन के कार्य का वर्णन करते हुए किया और कहा कि उनका अनुसंधान कार्य केवी के कार्य से प्रेरित था जिससे आगे चलकर वे वेडेलोलैक्टोन का संश्लेषण कर सके। इस यौगिक की गतिविधियों की पुनः समीक्षा हेतु अनुसंधान किया गया जिसमें उक्त यौगिक की नई गतिविधियों का पता चला तथा उसका सम्पूर्ण संश्लेषण भी किया जा सका। तदुपरांत उन्होंने यक्ष्मा निरोधी (ऐन्टीड्यूबरकुलर) अपने अनुसंधान के सम्बन्ध में बताया जिससे सीजीआई 17341 नामक अणु का निर्माण हुआ। इस अणु में अपेक्षाकृत अधिक सक्रियता थी किन्तु उत्परिवर्तनीयता के कारण वह औषधि का रूप नहीं ले सका। उन्होंने इस अणु के जीवविज्ञान एवं रसायनविज्ञान पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी बताया कि बाद में इसी प्रकार के अणु को अन्यो ने भी अधिक सक्रिय पाया था जिस पर



डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, एनसीएल स्वागत-सम्बोधन देते हुए

नैदानिक दृष्टि से विविध परीक्षण किए जा रहे हैं।

डॉ. नागराजन ने निमेसुलाइड एवं मेलोक्सिकैम जैसी औषधियों की साइक्लोऑक्सीजेनेस-1 (कॉक्स-1) एवं -2 (कॉक्स-2) एन्जाइमों के साथ परस्पर क्रियाओं का भी वर्णन किया तथा यह पाया कि निमेसुलाइड वरणात्मक कॉक्स-2 निरोधक है। अंत में उन्होंने गाबापेन्टिन जैसे महत्वपूर्ण अणुओं एवं उसी तरह के अन्य अणुओं के घन अवस्था तथा विलायक अवस्था के रसायनविज्ञान पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से ऐसे फ्लुओरो यौगिकों के बारे में बताया जिन पर घन अवस्था क्रिस्टल का

अध्ययन किया गया तथा प्रथम बार एफ-एफ परस्पर क्रियाएं प्राप्त कर उनका सामान्यीकरण किया गया। उन्होंने ट्राइफेनिलट्राइसाइक्लो-ऑक्टाडाइन्स की अभिक्रियाओं की समस्या, जिस पर उन्होंने लगभग 40 वर्षों पूर्व शोधकार्य किया था, पर भी पुनर्विचार करते हुए यौगिकों को अवसंरचना जो उस समय तकनीकी विवरणों के साथ निर्धारित नहीं की जा सकी थी, पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए।

इससे पूर्व डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, एनसीएल ने अपने स्वागत-सम्बोधन में कार्बनिक रसायन

के क्षेत्र में प्रो. वेंकटरामन द्वारा किए गए योगदान तथा एनसीएल के साथ उनके सम्बन्धों को याद किया। उन्होंने डॉ. नागराजन का श्रोताओं से परिचय भी कराया। वर्ष 1954 में पीएच डी की उपाधि प्राप्त करने के बाद डॉ. नागराजन प्रेसीडेन्सी कॉलेज, चेन्नई, वेन स्टेट विश्वविद्यालय, डेट्रॉइट, संयुक्त राज्य अमेरिका, कैलिफोर्निया प्रौद्योगिकी संस्थान, पासाडेना, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा ज्यूरिख विश्वविद्यालय, स्विट्जरलैंड में लगभग आठ वर्ष डॉक्टरोत्तर अनुसंधान में लगे रहे। डॉ. नागराजन पिछले लगभग साढ़े चार दशकों तक भारत के विभिन्न रसायन उद्योगों में विविध पदों पर कार्य करते हुए उनसे जुड़े रहे। औषधीय रसायनविज्ञान, कीटनाशी रसायनविज्ञान, विषमचक्रीय संश्लेषण, प्राकृतिक उत्पादों एवं संश्लिष्ट कार्बनिक रसायनविज्ञान हेतु एन एम आर स्पेक्ट्रोमविज्ञान के प्रयोग में उन्हें विशेषज्ञता प्राप्त है। यह व्याख्यान एनसीएल अनुसंधान फाउण्डेशन, जो एक गैरलाभदायी न्यास है तथा जिसकी स्थापना विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी, के तत्वाधान में आयोजित किया गया था।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए एस.के. रस्तोगी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादक: दीक्षा बिष्ट; अनुवाद: मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आउट: मलखान सिंह; कम्पोजिंग: संतोष खुराना, मीरा देवी

फोन: 25841846, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/371 ग्राम: PUBLIFORM, New Delhi; फैक्स: 25847062

ई-मेल: csirsamachar@niscacir.res.in वेबसाइट: http://www.niscacir.res.in पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें